कर चोरों पर नकेल

आर्थिक अपराधों पर अंकुश लगाना वित्तीय व्यवस्था को सुदृढ़ करने की अनिवार्य शर्त है. बीते वर्षों में अर्थव्यवस्था को औपचारिक और पारदर्शी बनाने की दिशा में सरकार ने ठोस प्रयास किया है. इस क्रम में अब कर चोरों से कड़ाई से निपटने की तैयारी हो रही है. केंद्रीय प्रत्यक्ष कर बोर्ड ने कुछ विशेष प्रकार की कर चोरी, जैसे कि विदेशों में काला धन जमा करना, के मामलों में नये निर्देश जारी किया है. सोमवार से लागू हुए इन नियमों से भारी शुल्क या अर्थदंड देकर आर्थिक अपराधों से बरी होने की परिपाटी का अंत हो जायेगा. अभी तक ऐसा होता था कि विदेशी बैंकों में जमा अघोषित रकम या रखी गयी संपत्ति का खुलासा होने पर दोषी व्यक्ति आर्थिक दंड के रूप में बड़ी धनराशि सरकार को देकर अपराधमुक्त हो जाता था. हालांकि, 2015 के काला धन निरोधी कानून में चक्रवृद्धि हिसाब से रकम देकर बरी होने पर पूरी तरह रोक लगा दी गयी थी, परंतु उसमें भी 30 फीसदी कर तथा भारी अर्थदंड का प्रावधान है. अब कर चोरी कर बाहर धन भेजनेवालों को कर और उसके ब्याज के हिसाब से पैसा जमाकर बच निकलने का रास्ता बंद कर दिया है. वैसे कुछ मामलों में बोर्ड की रिपोर्ट के अनुसार वित्त मंत्री को दोषी को छूट देने का अधिकार होगा. यह पहल सरकार और संबद्ध विभागों द्वारा उठाये जा रहे कदमों का एक हिस्सा है. अप्रैल में भारत ने अमेरिका से एक करार किया है, जिसके तहत बहुराष्ट्रीय कंपनियों द्वारा कर चोरी रोकने का प्रावधान है. अक्सर ऐसे मामले सामने आते हैं, जिनमें एक से अधिक देशों में सक्रिय कंपनियां कानूनों की अवहेलना कर किसी और देश की कमाई को ऐसे देशों में दिखा देती हैं, जहां करों की दरें बहुत कम हैं. ऐसी कंपनियों द्वारा कर चोरी को रोकने के लिए विकसित अर्थव्यवस्थाओं के समूह के बहुपक्षीय समझौते पर भी भारत ने हस्ताक्षर किया है. इसके तहत अभी 90 देश वित्तीय खातों और कर संबंधी सूचनाओं का आदान-प्रदान करते हैं. भारत उन देशों में है, जहां आयकर और अन्य प्रत्यक्ष कर देनेवालों की संख्या आबादी के अनुपात में बहुत कम है. ऐसे लोगों की बड़ी संख्या है, जो पर्याप्त आमदनी के बावजूद कर नहीं देते हैं. रिपोर्टों के मुताबिक, चालू वित्त वर्ष के पहले दिन यानी एक अप्रैल से सरकार ने ऐसे लोगों की सूचना जुटाने की एक परियोजना शुरू की है. इसमें सोशल मीडिया और अन्य स्रोतों से व्यक्ति द्वारा बतायी गयी आमदनी से अधिक खर्च पर नजर रखने का इंतजाम किया जा रहा है. अभी तक सूचना तकनीक के विपुल डेटा भंडार से ऐसी जानकारी जुटाने की व्यवस्था बेल्जियम, कनाडा, ब्रिटेन, ऑस्ट्रेलिया जैसे कुछ ही देशों में है. वस्तु एवं सेवा कर (जीएसटी) परिषद भी कर चोरी रोकने के नियमों को कड़ा करने की कोशिश में है. ऐसे उपायों से न सिर्फ सरकार का राजस्व बढ़ेगा और सार्वजनिक खर्च के लिए अधिक राशि उपलब्ध होगी, बल्कि अर्थव्यवस्था की गति और पारदर्शिता में बढ़ोतरी होगी.

कर चोरी रोकने के उपायों से न सिर्फ सरकार का राजस्व बढ़ेगा और सार्वजनिक खर्च के लिए अधिक राशि उपलब्ध होगी, बल्कि अर्थव्यवस्था की गति और पारदर्शिता में बढ़ोतरी होगी.

चुनाव नतीजे और नीतीश कुमार फैक्टर

केसी त्यागी
राष्ट्रीय प्रवक्ता, जदयू
kctyagimprs@gmail.com

लोकसभा चुनावों में बिहार के नतीजों ने सबको आश्चर्यचकित किया है. कई धारणाएं, पूर्वानुमान तथा राजनीतिक पंडितों के आंकड़े एक बार पुनः गलत साबित हुए हैं. सबसे अधिक चौंकानेवाली दो घटनाएं हैं. पहली, जदयू और इसके नेता नीतीश कुमार की बढ़ती स्वीकार्यता और दूसरी आरजेडी में उत्तराधिकार का असफल प्रयोग और परंपरागत दकियानूसी राजनीति का खात्मा. कई राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि बिहार से जातीय राजनीति समाप्त हो चुकी है. बिहार और देश जातिविहीन समाज की तरफ बढ़ रहा है. ऐसे चिंतक हजारों साल की सामाजिक विषमता, उससे पैदा हुई गैरबराबरी आदि को नजरअंदाज करने की गलती कर रहे हैं. निःसंदेह यह चुनाव अमेरिकी राष्ट्रपति पद्धति की तर्ज पर हुआ है, जिसके केंद्र बिंदु सिर्फ नरेंद्र मोदी थे तथा अन्य विषय गौण रह गये. लेकिन ऐसा माननेवालों की भी लंबी तादाद है कि बिहार से केंद्रीय मंत्रिमंडल के विस्तार में दुर्बल वर्गों की अनदेखी की गयी है. इन वंचित समूह के लोगों ने लंबी कतारें बनाकर एनडीए को जिताने तथा नरेंद्र मोदी को शिखर पर पहुंचाने में महती भूमिका निभायी है.

मंडल कमीशन के लागू होने के बाद 50 फीसदी से अधिक आबादी रोमांचित और आंदोलित हुई थी कि उनके तबके को शिक्षा व रोजगार के अवसर में आनुपातिक हिस्सेदारी मिलेगी. दक्षिण के तमिलनाडु की भूमि से समानता का यह आंदोलन लखनऊ और पटना में फलने-फूलने लगा. शुरू के दिनों में मंडल के समर्थक नेताओं और पार्टियों के प्रति चुंबकीय आकर्षण था. आज जब ये दल धराशायी हो चुके हैं, तो आत्मचिंतन की बजाय चुनाव आयोग और इवीएम को निशाना बना रहे हैं. अच्छा होता कि इन दलों के परिवारों के प्रमुख, परिवार व पार्टी के साथ बैठकर गंभीर चिंतन करते. इन दलों का उदय कांग्रेस पार्टी की परिवारवादी, जातीय वर्चस्ववादी और भ्रष्टाचार में डूबी राजनीति के विकल्प के रूप में हुआ था. इन उभरते हुए नेतृत्व व समूहों को डॉ लोहिया ने चेताया भी था कि जब ये व्यक्ति या समूह राजकाज के शिखर नेतृत्व पर होंगे और प्रशासन का संचालन करेंगे, तो इनका आचरण पूर्ववर्ती शासकों से बेहतर व भिन्न होना चाहिए. यूपी-बिहार की समता व समानता की पक्षधर पार्टियां अपने कुशासन की वजह से आज लुप्त हो गयीं.

कटु आलोचना, विरोधियों के तीखे आरोपों के बावजूद इस आंदोलन का एक टुकड़ा जदयू न सिर्फ सलामत रहा, बल्कि उसका वोट प्रतिशत प्रत्येक चुनाव के बाद बढ़ता चला गया. आज यह मत प्रतिशत 22 फीसदी हो गया है. निःसंदेह निष्ठावान, ऊर्जावान कार्यकर्ताओं की फौज भी निरंतर सक्रिय भूमिका निभाती रही परंतु सबसे बड़ा कारण इस दल के मुखिया नीतीश कुमार का स्वावलंबी आचरण, परिवारवाद व धन-अर्जन करने की तृष्णा से कोसों की दूरी तथा जाति की बजाय वर्ग व समूह की राजनीति को केंद्रित करना भी इन्हें प्रासंगिक बनाये रखता है.

साल 2014 जदयू की चुनावी प्रदर्शन का खराब दौर रहा, जब पार्टी को केवल दो सीटें मिलीं. लेकिन उस समय भी इसे 16 फीसदी मत मिले थे. साल 2010, 2015 और अब 2019 में इसे क्रमशः 23, 17 तथा 22 फीसदी वोट प्राप्त हुए. इन सभी चुनावों में नीतीश कुमार का सुशासन व विकास निरंतर सरकार बनाने में सर्वाधिक अहम रहा. जनादेश का निरादर और अनदेखी ने आज आरजेडी, सपा, बसपा को कैसे मटियामेट कर दिया है. चारा घोटाला कांड में कानूनी प्रक्रिया के तहत अदालत से दोषी पाये जाने पर लालू जी ने अपने उत्तराधिकारी के रूप में अपनी धर्मपत्नी को चुना, जिनका राजनीतिक अनुभव शून्य था. नीतीश कुमार ने समाज के आखिरी पायदान पर खड़ी मुसहर जाति के नेता मांझी को चुना. किन्ही राजनीतिक कारणों से मांझी अपनी अवसरवादिता के कारण नीतीश कुमार से दूर हो गये, लेकिन अपनी जाति का विश्वास नीतीश कुमार के पास छोड़ गये.

जब समूची राजनीतिक पार्टियां वोटों के झुंडों को संगठित करने में लगी रहती हैं, तब बिहार में लीक से हटकर सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध हल्ला बोल किया गया है.

निःसंदेह यह मंडल से आगे की राजनीति का दौर है, जिसे मंडल प्लस के रूप में रेखांकित किया जाता है. बिहार में इसका जीता-जागता उदाहरण है, जहां अति पिछड़ा, महिलाओं, महादलितों और अल्पसंख्यक वर्ग के लोगों के लिए दर्जनों योजनाएं चलायी गयी हैं. बिहार में पुरुषों से अधिक महिलाओं का मत प्रतिशत रहा. मद्यनिषेध विरोधियों के लिए यह सबक भी है. कैसे सामाजिक कुरीतियों के कारण सामान्य परिवार गृह क्लेश व अन्य उत्पीड़न का शिकार हो रही थी, किसी से छिपा नहीं है. इन गूंगे-बहरे मतदाताओं के स्वर रोजमर्रा के मुद्दे नहीं बनते, लेकिन प्रचंड गर्मी में लंबी कतारें लगाकर मतदान में इनके स्वर मुखर जरूर हो जाते हैं.

जब समूची राजनीतिक पार्टियां वोटों के झुंडों को संगठित करने में लगी रहती हैं, तब बिहार में लीक से हटकर सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध हल्ला बोल किया गया है. बाल विवाह, मद्यनिषेध, वृद्ध सम्मान योजना समेत कई सामाजिक पहलें सिर्फ बिहार में ही हुई हैं.

लोकसभा चुनाव में जदयू प्रमुख ने 171 जनसभाएं कीं. महागठबंधन के नेता एक दूसरे को जब नीचा दिखाने में लगे हुए थे, तब एनडीए की तिकड़ी मोदी, पासवान व नीतीश कुमार एक दिन में तीन से चार सभाएं कर अपनी जनकल्याणकारी योजनाओं का ब्योरा दे रहे थे. एनडीए में असहयोग की कोई शिकायत नहीं थी, जबकि नेता प्रतिपक्ष के कुनबे में विस्फोट की खबरें सुर्खियों में रहा करती थीं. सवर्ण आरक्षण को लेकर भी नये-पुराने नेतृत्व में भयंकर विवाद थे, जिसकी चपेट में कई दिग्गज उम्मीदवार भी स्वाहा हो गये. राहुल गांधी की सभा में तेजस्वी यादव की अनुपस्थिति की चर्चा आज भी है. कद्दावर नेता शकील अहमद गठबंधन के विरुद्ध उम्मीदवार बने तथा नेत्री रंजीता रंजन को हराने में राजद के रणबांकुरे अतिरिक्त सक्रिय हो गये. इससे इतर मोदीजी की सभा से पहले स्वयं नीतीश कुमार तैयारियों का आकलन किया करते थे. ऐसे तमाम संयुक्त प्रयासों ने एनडीए को समरस बनाने का काम किया. केंद्र व राज्य सरकार के विकास कार्यों ने भी जीत में बड़ी भूमिका अदा की है. साल 2020 का चुनाव नजदीक आ गया है और मौजूदा आंकड़ों के अनुसार, एनडीए की लगभग 224 विधानसभा सीटों पर बढ़त है. यह बढ़त टूटे, बिखरे और आभाहीन तथा हाशिये पर जा चुके महागठबंधन के लिए काफी है.

बोधि वृक्ष

विषय और विषयी

जड़ क्या है? जड़ है शक्ति घनीभूत रूप. मन क्या है? जड़ तत्व के चूर्णीभूत होने से मन की उत्पत्ति होती है. मान लो, तुमको बहुत कष्टकर शारीरिक श्रम करना पड़ता है. स्वाभाविक रूप से इसमें एक समय थक जाओगे. यदि तुम कोई शारीरिक श्रम नहीं किये हो और दस घंटा लगातार बौद्धिक श्रम कर रहे हो, इसमें भी तुम थक जाओगे. इस अवस्था में तुम शरीर और मन दोनों में ही थकावट महसूस करोगे. इसलिए मनुष्य का शरीर केवल जड़ देह नहीं है, एक ही साथ यह मानसिक देह और आध्यात्मिक देह भी है. परंतु आध्यात्मिक देह बोलकर कोई अस्तित्व नहीं हो सकता है. मनुष्य को है पंचभौतिक शरीर और है एक मानसिक देह, जिसमें विभिन्न स्तर हैं. परंतु आध्यात्मिक क्षेत्र में कोई देह रह नहीं सकता. आध्यात्मिकता है साक्षीतत्व, जो देहयुक्त कोई सत्ता तो नहीं हो सकती. परंतु यह साक्षीतत्व शरीर से संबंधित है. तुम्हारा शरीर जो कुछ कर रहा है, तुम्हारी आत्मा उसके साथ संबंधित है, और जान रहे है, साक्षी रूप में देख रहे हैं कि वह क्या कर रहा है. तुम्हारी आत्मा तुम्हारे मानस देह का भी साक्षीतत्व है, जो देख रहा हैं कि तुम्हारा मन क्या कर रहा है, अतः ये हुए साक्षी सत्ता. यह कोई देह नहीं है. जब यह साक्षी तत्व किसी व्यष्टि के साथ संपर्कित हो जाते हैं, तो हम उसे कहते हैं, अणु साक्षीतत्व अथवा जीवात्मा. और जब वह इस विश्व के सब अस्तित्वों के ज्ञाता हो जाते हैं, तब वे परमचैतन्य सत्ता हो जाते हैं. आध्यात्मिक साधना अणु विषय को भूमाविषय में रूपांतरित करना है. मान लो, कोई एक अणु अस्तित्व है, यह अणु अस्तित्व एक सीमा रेखा के बंधन में आबद्ध है और सीमा रेखा का मतलब हीं है- तमोगुण का बंधन. जो कुछ भी सीमारेखा में बद्ध है, वह सत्वगुण, रजोगुण और तमोगुण- मूल त्रिगुण तत्वों के दायरे में आ जाते हैं. जब कोई क्रिया संपादित होती है, उसमें दो सत्ता रहती है- विषय और विषयी. दृष्टवस्तु है विषय और द्रष्टा है विषयी और इन दोनों के बीच दर्शन रूप क्रिया, जो विषयी और विषय में योगसूत्र स्थापित करती है.

श्रीश्री आनंदमूर्ति

संस्कृति के एक सिपाही का जाना

कुमार प्रशांत
गांधीवादी विचारक
k.prashantji@gmail.com

इतिहास, राजनीति, सामाजिक-सांस्कृतिक परंपराएं, मिथक, किंवदंतियां, यौनिक आकर्षण का जटिल संसार- सबको समेटकर अपनी देशज जमीन से कहानियां निकालना और उन्हें आधुनिक संदर्भ देकर बुनना, गिरीश कर्नाड का यह देय हम कभी भूल नहीं सकते.

मुझे अच्छा लगा कि गिरीश रघुनाथ कर्नाड को संसार से वैसे ही विदा किया गया, जैसे वे चाहते थे- निःशब्द! कोई तमाशा न हो, कोई शवयात्रा न निकले, कोई सरकारी आयोजन न हो, कोई क्रिया-कर्म भी नहीं, भीड़ भी नहीं, सिर्फ निकट परिवार के थोड़े से लोग हों- ऐसी ही विदाई वे चाहते थे.

मुंबई में समुद्र के पास, बांद्रा में उनके अस्त-व्यस्त घर में लंबी चर्चा समेटकर हम बैठे थे. जीवन का अंत कैसे हो, ऐसी कुछ बात उस दिन वैसे ही निकल पड़ी थी और मैंने कहा था कि कभी बापू-समाधि (राजघाट) पर, शाम को घूमते हुए अचानक ही जयप्रकाशजी ने कहाः 'मुझे यह समाधि वगैरह बनाना बहुत खराब लगता है... जब ईश्वर ने वापस बुला लिया, तो धरती पर अपनी ऐसी कोई पहचान छोड़ने में कैसी कुरूपता लगती है! हां, कोई बापू जैसा हो कि जिसकी समाधि भी कुछ कह सकती है, तो अलग बात है. समाज परिवर्तन की धुन में लगे हम सबकी समाधि इसी समाधि में समायी हुई माननी चाहिए.' फिर मेरी तरफ देखते हुए कहा, 'तुम लोग ध्यान रखना कि मेरी कोई समाधि कहीं न बने!' गिरीश बड़े गौर से मुझे सुनते रहे. आज जयप्रकाश की समाधि कहीं भी नहीं है. गिरीश धीमे से बोले, 'अच्छा, यह सब तो मुझे पता ही नहीं था! मैं जेपी को जानता ही कितना था! लेकिन कुमार, यह अपनी कोई पहचान छोड़कर न जानेवाली बात बहुत गहरी है.'

मैं उनको जानता था, पढ़ा भी था, पर मिला नहीं था कभी. इसलिए 'धर्मयुग' के दफ्तर में जब धर्मवीर भारतीजी ने मुझसे कहा, 'प्रशांतजी, ये हैं गिरीश कर्नाड!' तो मैंने इतना ही कहा था, 'जानता हूं!' गिरीश कर्नाड ने आत्मीयता से हाथ आगे बढ़ाया. जब तक गीतकार वसंतदेव उनसे मेरे बारे में कुछ कहते रहे, वे मेरा हाथ पकड़े सुनते रहे और फिर बोले, 'मुझे बहुत खुशी हुई यह जानकर कि ऐसे गांधीवाले भी हैं!'

साल 1984 की बात है. फिल्म 'उत्सव' की तैयारी का दौर था- शूद्रक के अति प्राचीन नाटक 'मृक्षकटिक' का हिंदी फिल्मीकरण! शशि कपूर से मेरा परिचय था, तो मैं जानता था कि वे ऐसी किसी फिल्म की कल्पना से खेल रहे हैं. बात गिरीश कर्नाड की तरफ से आयी थी. तब कला फिल्मों का घटाटोप था. शशि कपूर मसाला फिल्मों से पैसे कमा कर, कला फिल्मों में लगा रहे थे. मुझे लगता था कि उनकी इस चाह का कुछ लोग अपने मतलब के लिए इस्तेमाल कर रहे हैं. 'उत्सव' के साथ भी कुछ ऐसा ही तो नहीं? भारतीजी चाहते थे कि उनकी तरफ से मैं 'उत्सव' के बनने की प्रक्रिया को देखूं-समझूं और फिर इस पर लिखूं. मैंने उनकी बात स्वीकार की और तब से गिरीश से मिलना होने लगा.

गिरीश का महाराष्ट्र से रिश्ता कुछ मजेदार-सा था. मां-पिता छुट्टियों में घूमने महाराष्ट्र के माथेरान में आये थे. इसी घूमने में मां ने माथेरान में उनको जन्म दिया. आज भी माथेरान के रजिस्टर में लिखा है : 19 मई 1938; रात 8.45 बजे. सो गिरीश मराठी से अनजान नहीं थे, लेकिन थे कन्नड़भाषी! भाषा का इस्तेमाल करना और भाषा में से अपनी खुराक पाना, दो एकदम अलग-अलग बातें हैं. गिरीश कन्नड़ भाषा से ही जीवन-रस पाते थे. इसलिए ही तो इंग्लैंड के ऑक्सफोर्ड में पढ़ाई के बाद भी वे विदेश में बसे नहीं, भारत लौटे और जो कुछ रचा, वह सब कन्नड़ में! इतिहास, राजनीति, सामाजिक-सांस्कृतिक परंपराएं, मिथक, किंवदंतियां, यौनिक आकर्षण का जटिल संसार- सबको समेटकर अपनी देशज जमीन से कहानियां निकालना और उन्हें आधुनिक संदर्भ देकर बुनना, गिरीश कर्नाड का यह देय हम कभी भूल नहीं सकते. 'ययाति' और 'तुगलक' ने इसी कारण रंगकर्मियों का ध्यान खींच लिया कि ऐसी जटिल संरचना को मंच पर उतारना चुनौती थी, जिसे गिरीश ने साकार कर दिखाया था. गिरीश कर्नाड अव्वल दर्जे के अध्येता-नाट्य लेखक थे. बहुत सधे हुए व साहसी निर्देशक थे. अभिनय में उनकी खास गति नहीं थी, लेकिन वे सिद्ध सह-कलाकार थे. कहीं से हमें वह धागा भी देखना व पहचानना चाहिए, जो उसी वक्त मराठी में विजय तेंडुलकर, हिंदी में मोहन राकेश व बांग्ला में बादल सरकार बुन रहे थे. यह भारतीय रंगकर्म का स्वर्णकाल था. इब्राहीम अल्काजी, बीवी कारंत, प्रसन्ना, विजया मेहता, सत्यदेव दुबे, श्यामानंद जालान, अमल अल्लाना जैसे अप्रतिम रंगकर्मियों ने इस दौर में अपना सर्वश्रेष्ठ दिया. यह भारतीय रंगकर्म का पुनर्जागरण काल था.

फिल्म 'उत्सव' का बनना पूरा हुआ और हमारा साथ-संपर्क भी कम हुआ. गिरीश कर्नाड हमारे दौर में अत्यंत संवेदनशील मन व अत्यंत प्रखर अभिव्यक्ति के सिपाही बन गये. राजनीतिक-सामाजिक सवालों पर वे हमेशा बड़ी प्रखरता से हस्तक्षेप करते थे. निशांत, मंथन, कलियुग से लेकर सुबह, सूत्रधार आदि फिल्मों में आप इस गिरीश कर्नाड को खोज सकते हैं. मालगुडी डेज में गिरीश नहीं होते, तो क्या होता, हम इसकी कल्पना करें जरा! वीएस नायपाल जिस नजर से भारतीय सभ्यता की जटिलताओं को देखते-समझते हैं और फिसलते हुए सांप्रदायिक रेखा पार कर जाते हैं, उसे पहली चुनौती गिरीश कर्नाड ने ही दी थी. वे गिरीश कर्नाड ही थे, जिन्होंने 'अरबन नक्सल' जैसे मूर्खतापूर्ण आरोप व गिरफ्तारी का प्रतिकार करते हुए, बीमारी की हालत में, जब सांस लेने के लिए उन्हें ट्यूब भी लगा था, समारोह में आये थे और गले में वह पोस्टर लटका रखा था, जिस पर लिखा था : मी टू अरबन नक्सल! वे तब संस्कृति के सिपाही की भूमिका निभा रहे थे.

आपके पत्र

ट्रंप का रवैया ठीक नहीं

अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने रविवार को अपने एक ट्वीट में लंदन के मेयर सादिक खान की खिंचाई की. वहां चाकूबाजी की एकाध घटना घट गयी थी. ऐसा तो लगभग हर शहर में होता है, तो क्या राष्ट्रपति सभी शहरों के मेयरों को हटाने की मांग करेंगे? बड़े देश के बड़े राष्ट्रपति का बड़प्पन इसी में है कि वह छोटी-मोटी घटनाओं को नजरअंदाज करके चले. उनके खुद के देश में लगभग प्रत्येक सप्ताह किसी चर्च में, स्कूल में, सड़क पर गोलीबारी की घटनाएं होती रहती हैं. इसके लिए क्या वह शहर के मेयर को हटवा देते हैं? पाकिस्तानी मूल के सादिक खान चूंकि शुरू से ही ट्रंप के आलोचक रहे हैं. इसलिए इन्हें निशाना बनाया जा रहा है. फासीवादी और अतिराष्ट्रवादियों की पहचान ही यही है कि वे कभी खुद की आलोचना बर्दाश्त नहीं करते. सादिक खान विपक्षी लेबर पार्टी से ताल्लुक रखते हैं, इसलिए शायद ब्रिटिश सरकार भी उनका साथ नहीं दे रही है.

जंग बहादुर सिंह, गोलपहाड़ी, जमशेदपुर

योग का विकल्प नहीं

पुरातन काल से ही भारतीय सभ्यता व संस्कृति ने स्वस्थ शरीर को मानव जीवन का अभिन्न हिस्सा माना है. प्राचीन समय में गुरुकुलों में दी जाने वाली शिक्षा में योग की महत्ता समझ कर इसे पाठ्यक्रम का हिस्सा बनाया गया था, लेकिन धीरे-धीरे वक्त के बदलने के साथ-साथ योग की परिभाषा भी बदलती गयी और कब अपने आसनों से निकलकर योग महंगी मशीनों के जाल में कैद हो गया, पता ही नहीं चला. अपने जीवन को सुगम और स्वस्थ बनाने की चाहत कब निःशुल्क योग से वातानुकूलित कमरों में सिमट गयी और महंगे व्यायाम ने महंगा रोग दे दिया, पता ही नहीं चला. मानव समाज इस बात को भलीभांति समझ चुका है कि योग का कोई विकल्प नहीं है. योग को आत्मसात कर जहां एक ओर हम भारतीय सभ्यता और संस्कृति को मजबूती प्रदान कर रहे हैं, वहीं दूसरी ओर स्वस्थ और निरोग जीवन की अभिलाषा को नया आयाम दे रहे हैं. योग दिवस के बहाने ही सही वृहद स्तर पर योगाभ्यास का आयोजन हो रहा है. निस्संदेह योग को यदि हमारे जीवन का हिस्सा बनाया जाए, तो स्वस्थ शरीर की संकल्पना पूरी हो जायेगी .

सौरभ पाठक, बुंडू

अंधे कुएं में छलांग!

केजरीवाल सरकार का महिलाओं को बसों और मेट्रो में मुफ्त सफर कराने का फैसला एकदम अंधे कुएं छलांग लगाने जैसा है. अव्वल तो दिल्ली में पहले ही बस और मेट्रो सेवा पर्याप्त नहीं है. मुफ्त यात्रा सुविधा से भीड़ और बढ़ेगी और हालात ज्यादा बिगड़ेंगे. महंगा किराया और टैक्स देने वाली जनता को निराशा होगी और उसका मनोबल टूटेगा. इसके अतिरिक्त बसों और मेट्रो का राजस्व घटने से वेतन आदि के भी और लाले पड़ेंगे. प्रख्यात बुद्धिजीवी और मेट्रोमैन श्रीधरन जी ने भी इस मुफ्त सफर को गलत माना है. आशा है केजरीवाल सरकार इस पर विचार करेगी.

महेंद्र मान, अलीपुर, दिल्ली

कुछ अलग

न हो दिल की गलियां सूनी

मुकुल श्रीवास्तव
टिप्पणीकार
sri.mukul@gmail.com

मेरे व्हॉट्सएप पर एक जोक आया- कभी कभी मेरे दिल में खयाल आता है... अगर तुम साढ़े दस बजे सो जाती हो, तो तुम्हारे व्हॉट्सएप्प पर लास्ट सीन ढाई बजे रात क्यों दिखाता है? जोक पढ़कर मेरे दिमाग की बत्ती जल गयी. असल में नये-नये एप हमारी जिंदगी में किस तरह असर डाल रहे हैं, इसका अंदाजा हमें खुद नहीं है. एसएमएस में तो आप झूठ बोलकर निकल सकते थे कि मेसेज नहीं मिला. पर ये नये-नये चैटिंग एप, लास्ट सीन और ब्ल्यू टिक वाला स्टेटस आपकी सारी हकीकत खोल देते हैं.

यारी-दोस्ती करना अच्छी बात है, पर यारी-दोस्ती जब ज्यादा और गलत लोगों से हो जायेगी, तो आपको समस्या आयेगी ही. एक ओर मोबाइल क्रांति ने हमें ग्लोबली कनेक्टेड तो कर दिया ही है. वहीं कहीं हम नेट बैकवर्ड न घोषित कर दिये जायें, इस चक्कर में जितने चैटिंग एप इंटरनेट पर उपलब्ध हैं, वे सब हमारे मोबाइल पर होने चाहिए. इस ललक ने कब हमें इतना एक्सप्रेशनलेस कर दिया कि हम अपने रीयल एक्सप्रेशन को भूल टेक्निकल एक्सप्रेशन यानी इमोजी के गुलाम बन गये हैं. हंसी आये या ना आये, मगर 'हा हा हा' लिखकर कोई स्माइली बना दो, सामने वाला यही समझेगा कि आप बहुत खुश हैं. पर क्या आप वाकई खुश हैं?

अक्सर हम चैट पर यही कर रहे होते हैं. वर्चुअल चैटिंग में हम जीवन की असली समस्याओं का हल ढूंढने लग गये हैं. हमारे फोनबुक में बहुत से लोगों के नंबर सेव रहते हैं और हम जितने ज्यादा चैटिंग एप डाउनलोड करेंगे, हम उतने ही ज्यादा खतरे में रहेंगे, क्योंकि कोई-न-कोई चैटिंग एप हर कूल डूड के मोबाइल में रहता है और इससे कोई भी, कभी भी आपको संदेशा भेज सकता है. यह जाने बगैर कि आप बात करने के मूड में हैं या नहीं. दूसरी चीज है आपकी प्राइवेसी, चैटिंग एप और कुछ न बतायें, तो भी ये तो सबको बता ही देते हैं कि आप किसी खास एप पर कितने एक्टिव हैं. अगर इससे बचना है, तो कुछ और एप डाउनलोड कीजिये. यह तो आप भी मानेंगे कि बगैर काम की चैटिंग खाली लोगों का काम है या आप इमोशनली वीक हैं और रीयल लाइफ में आपके पास कोई नहीं है, जिससे आपकी उंगलियां मोबाइल के की पैड पर भटकती रहती हैं कि कहीं कोई मिल जाये?

ज्यादा चैटिंग बताती है कि आप फोकस्ड नहीं हैं और आपके पास कोई काम नहीं है. ये समय कुछ पाने का, कुछ कर दिखाने का है. बात जिंदगी की हो या रिश्तों की, हम जितने सेलेक्टिव रहेंगे, उतना ही सफल रहेंगे और यही बात एप और चैटिंग पर भी लागू होती है. जो आपके अपने हैं, उन्हें वर्चुअल एक्सप्रेशन नहीं, रीयल एक्सप्रेशन की जरूरत है. इमोजी आंखों को अच्छी लगती है, पर जरूरी नहीं कि दिल को भी अच्छी लगे. जो रिश्ते दिल के होते हैं, उन्हें दिल से जोड़िए. नहीं तो एक वक्त ऐसा आयेगा, जब आप होंगे और आपकी तन्हाई होगी. आपके मोबाइल के फोनबुक में खूब नंबर भरे होंगे, लेकिन आपके दिल की गलियां सूनी होंगी.

देश दुनिया से

एडीबी ने किया पाक को मदद देने से इनकार

पाकिस्तान को उस वक्त शर्मिंदगी का सामना करना पड़ा, जब मनीला स्थित एशियन डेवलपमेंट बैंक (एडीबी) ने 3.4 अरब डॉलर की मदद पाकिस्तान को देने की बात से इनकार कर दिया. गौरतलब है कि पाक सरकार ने कहा था कि उसे एडीबी से 3.4 अरब डॉलर मिलेगा. बीते दिनों पाक सरकार के दो सीनियर अधिकारियों ने घोषणा की थी कि एडीबी 3.4 अरब डॉलर पाकिस्तान को बजट सपोर्ट के रूप में देगा. इसके बाद प्रधानमंत्री इमरान खान के आर्थिक सलाहकार डॉ अब्दुल हफीज शेख ने अपने आधिकारिक ट्विटर हैंडल से ट्वीट कर कहा कि एडीबी के दो सीनियर अधिकारियों से उनकी बैठक हुई है. हफीज ने भी एडीबी से आर्थिक मदद मिलने की पुष्टि की. डॉ शेख ने कहा था एडीबी पाकिस्तान को बजट सपोर्ट देगा. शेख ने कहा था कि एडीबी के साथ बैठक में उसके प्रोग्राम के तहत इस रकम पर सहमति बनी है. प्रधानमंत्री के सलाहकार ने यहां तक कह दिया कि एडीबी दो अरब डॉलर इस वित्तीय वर्ष में जारी करेगा. शेख ने कहा था कि इससे विदेशी मुद्रा भंडार में स्थिरता आयेगी. यह मदद हमारी अर्थव्यवस्था में परियोजनाओं के लिए अतिरिक्त होगी. हम आर्थिक सुधारों में एडीबी की प्रतिबद्धता की सराहना करते हैं. लेकिन अब एडीबी ने इससे इनकार किया है.

BBC NEWS

कार्टून कोना

साभार : डॉन

पोस्ट करें : प्रभात खबर, 15 पी, इंडस्ट्रियल एरिया, कोकर, रांची 834001, **फैक्स करें** : 0651-2544006,
मेल करें : eletter@prabhatkhabar.in पर ई-मेल संक्षिप्त व हिंदी में हो. लिपि रोमन भी हो सकती है